Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies
Vol. 2, Issue-1 (January-March 2026), pp.138-141, ISSN: 3107-5088, www.cognitivethinking.in

डा0 रामकुमार वर्मा की काव्य यात्रा के विविध सोपान

डा0 कर्मेन्द्र सिंह सेंगर
प्रवक्ता–हिन्दी, श्री मलखानसिंह महाविद्यालय ठूलई (हाथरस)
ईमेल : karmendrasinghaingar@gmail.com

Article: Received: 10/03/2026, Accepted: 28/03/2026, Published:31/03/2026.
D.O.I. https://doi.org/10.5281/zenodo.22081628
© 2026 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are properly credited. (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सारांश

राम कुमार वर्मा हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि, नाटककार एवं साहित्यकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। उनकी काव्य–यात्रा में भावुकता, प्रकृति–प्रेम, मानवीय संवेदना, सौंदर्य–बोध, आध्यात्मिक चेतना तथा राष्ट्रीय भावना का क्रमिक विकास दिखाई देता है। उनकी आरंभिक कविताओं में छायावादी प्रभाव, कोमल भावनाओं और प्रकृति के रमणीय चित्रण की प्रधानता मिलती है, जबकि आगे चलकर उनकी काव्य–दृष्टि अधिक व्यापक और जीवनपरक होती जाती है। प्रेम, विरह, करुणा, सौंदर्य और आत्मानुभूति के साथ–साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना भी उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती है। उनकी भाषा में माधुर्य, लयात्मकता, प्रतीकात्मकता और भाव–सघनता उल्लेखनीय है। राम कुमार वर्मा की काव्य–यात्रा के विविध सोपानों का अध्ययन हिंदी कविता में छायावादी संवेदना से विकसित होती आधुनिक जीवन–दृष्टि को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन में उनकी काव्य–चेतना के विभिन्न चरणों, प्रमुख काव्य–प्रवृत्तियों, विषय–वस्तु, शिल्प एवं भाषा तथा बदलते सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द

राम कुमार वर्मा, काव्य–यात्रा, छायावाद, प्रकृति–चित्रण, प्रेम, विरह, सौंदर्य–बोध, मानवीय संवेदना, आध्यात्मिक चेतना, राष्ट्रीय भावना, सामाजिक चेतना, काव्य–शिल्प, भाषा–शैली, प्रतीकात्मकता, आधुनिक हिंदी कविता, भावुकता, आत्मानुभूति।

प्रस्तावना

डा0 रामकुमार वर्मा की काव्य यात्रा द्विवेदी युग से प्रारम्भ होकर छायावादोत्तर युग तक जारी रही। उनका काव्य हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विभिन्न पदों और अलंकरणों से विभूषित होते हुए भी उनकी काव्य यात्रा में कभी कोई बॉधा या अवरोध उत्पन्न नहीं हुआ। अपने कवि जीवन में उन्होनें अनेक उतार–चढावों को देखा, युगीन प्रभावों को झेला और अपने इष्ट मित्र की प्रसंशा के साथ–साथ अलोचकों की कटुक्तियों, व्यंग्य और आलोचना के क्रूर एवं कठोर प्रहारों को सहा। वे कविता धर्म का निस्वार्थ भाव से निर्वहन करते रहे। सांसारिक अलोचना–प्रत्यालोचना उनके

लिए गौड़ थी। डा0 वर्मा की साहित्यि यात्रा काव्य क्षेत्र से आरम्भ हुई । प्रारम्भ में राष्ट्रवादी, आदर्शवादी और सामाजिक कल्याण हेतु इतिवृत्तात्मक कविताऐं लिखी। जब छायावाद ने पदार्पण किया तो छायावादी भावावृत्तियों को अपनाकर सौंदर्य प्रेम और प्रकृति पर अनेक रचनाऐं प्रस्तुत की। समय परिवर्तन के साथ ही उनकी कविताओं में परिवर्तन का दौर आया तो वे रहस्यवादी कविताऐं लिखने लगे। रहस्यवाद की भावाभिव्यक्ति जिन कविताओं में हुई है वे उनकी श्रेष्ठ एवं स्तरीय रचनाऐं सिद्ध हुई। वर्मा जी की काव्य यात्रा का उत्तरोत्तर विकास होता गया। विकास के प्रगतिवादी क्रम में विविध ऊँचाइयों को छूते गये। रहस्यवाद के बाद वे अध्यात्म की ऊँचाइयों को छूने लगे। आध्यात्म के परिपेक्ष्य में ही वे मानव और तत्पश्चात विश्वमानव मात्र के प्रति अपना मुखर प्रेम प्रदर्शित करते हुए आगे बढ़े। उनका सम्पूर्ण काव्य 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की भावना से भरा हुआ है। जिन आदर्शो और मूल्यों का लक्ष्यानुसंधान करके वे आगे बढ़े है उसमें उनको पूर्णतया सफलता प्राप्त हुई है। वर्मा जी के अकुण्ठ एवं अकलुष व्यक्तित्व के समान उनका काव्य साहित्य भी अकुंठित और जीवन्तता का प्रतीक है।

जिस साहित्यकार का साहित्य **आदर्श** और मूल्यों पर आधारित होता है वह कभी खत्म नहीं होता है। वर्मा जी की काव्य प्रतिभा ने अपने कई रंगों और आयामों को बदला है। लेकिन इन बदलावों के बाद भी उनके आदर्श मूल्यों में कोई बदलाव दिखाई नहीं देता। वर्मा जी मूलतः छायावादी कवि हैं। छायावाद के चार स्तम्भ कवियों के बाद डा0 वर्मा ही ऐसे कवि हैं जिन्होनें अपनी कविताओं के द्वारा हिन्दी साहित्य में छायावादी प्रवृत्ति को न केवल जीवित रखा वरन् उसका विकास भी किया। इसलिये डा0 वर्मा को पंचम स्तंभ माना जाता है। वर्मा जी की छायावादी कृतियों में अंजलि, रूपराशि, चित्रलेखा, चन्द्रकिरण, आकाश गंगा आदि काव्य कृतियों में भावबोध अभिव्यक्ति हुआ है। इन काव्य कृतियों में प्रकृति की छटा, सौन्दर्य एवं प्रेम का भावात्मक चित्रण हुआ है। इन कृतियों में कवि की अभूतपूर्व कल्पना शक्ति का भी कौशल देखने को मिलता है वर्मा जी छायावादी गीतों में जो सौन्दर्य और संवेदना के जो नये प्रयोग हुए है वो छायावादी चतुष्ठयी को छोड़कर शायद ही किसी में मिले। वास्तव में अगर देखा जाए तो डा0 वर्मा जी के इन रोमांटिक गीतों से छायावाद को पुनः ऊर्जा एवं शक्ति प्राप्त हुई है।

छायावादी काव्य की सतत और पवित्र साधना करने वाले कवि डा0 वर्मा जी ने छायावाद को हृदय की पवित्र अनुभूति के रूप में स्वीकार किया है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में कहीं भी अश्लीलता, हल्कापन, वासनाजन्य भावना का उद्रेक नहीं हुआ है। वरन उनमें गरिमा, सात्विकता और अलोकिकता तथा सौन्दर्य की रहस्यानुभूति हुई है। वर्मा जी के काव्य में मांसल सौन्दर्य न होकर सौन्दर्य का पावन रूप ही रूपायित हुआ है और यह पावन रूप दिव्यता और भव्ता तक पहुँच जाता है। वर्मा जी के छायावादी गीतों में अभिव्यक्त रूप, सौन्दर्य और प्रेम की सात्विकता अलौकिक बन गयी है। वास्तव में वर्मा जी की कविता लोकिक से अलौकिकता की ओर उन्मुख हुई है।

डा0 वर्मा जी की काव्य यात्रा छायावाद से प्रारम्भ होकर रहस्यवाद की ओर अन्मुख हुई है। इस सत्य को स्वयं वर्मा जी अंजलि काव्य कृति की भूमिका में स्वीकार किया है। छायावाद के मूल दर्शन सर्वात्मवाद के प्रभाव को भी स्वीकार कर अपनी रचनाओं में उनको स्वर प्रदान किया है। छायावादी कवियों ने यदि प्रकृति का तन देखा है तो वर्मा जी ने प्रकृति का मन देखने का प्रयास किया है। वर्मा जी का हृदय प्रकृति के प्रति अत्यन्त आकृष्ट होता है। उनका मन और उनकी आत्मा

प्रकृति का रसपान, मुखछवि और छवि रसास्वाद हेतु सदैव पिपासु और तृषित रहती है। कवि प्रकृति की तृषित आत्मा के साथ अपनी आत्मा को विलीन कर देना चाहता है। अपनी रचनाओं में बार–बार आत्मा की व्यवस्था का संकेत देते हैं।

डा0 वर्मा छायावादी कवि हैं, क्योंकि उनकी तृषित आत्मा की व्यथा प्रकृति के सौन्दर्य से तृप्त हो सकती है। वह प्रकृति में अपनी आत्मा को विस्तार और विलीन कर देना चाहता है। ऐसा केवल वर्मा जी ही नहीं करते वरन् छायावाद का प्रत्येक कवि इस चिन्तन को और क्रिया से गुजरता है। डा0 वर्मा जहॉ छायावादी गीतकार के रूप में यश पताका फहराते है वहीं वे रहस्यवादी कवि के रूप में भी उभरते हैं। उनके गीत कवि व्यक्तित्व से ऊपर उठते हुए रहस्यवादी कविता की ओर आगे बढ़ते हैं। वास्तविकता तो यह है कि सन् 1929 से 1960 तक उन्होनें काव्य साधना हेतु अनेक दीपक जलाये और उन्हें सर्वाधिक सफलता भी कवि रूप में ही प्राप्त हुई। रूपराशि, अंजलि, चित्रलेखा हिन्दी साहित्य की महान काव्य धरोहर है। इसके बाद कवि प्रबन्धकाव्य लिखने की ओर अग्रसर हुआ है। उनके सभी प्रबन्ध काव्य युगीन धर्म की सम्पूर्ति में सहायक हुए हैं। एकलव्य **''वीर हम्मीर''** और चित्तौड़ की चिता' आदि एक ही राष्ट्रधर्म से अनुप्रेरित रचनाऐं हैं। गीत से प्रबन्ध काव्य के सृजन में उन्हें दीर्घकालीन काव्य यात्रा करनी पड़ी है। वर्मा जी ने काव्य के समस्त रूपों में व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुभूतियों को शब्दवद्ध किया है। खण्ड काव्य की दृष्टि से 'निशीथ' हिन्दी का प्रथम छायावादी खण्डकाव्य कहा जा सकता है। 'गॉधी ज्ञान' और **'वीर हम्मीर'** उनके लघु प्रबन्ध काव्य कहे जा सकते हैं। वर्मा जी के सम्पूर्ण काव्य सहित्य की विशेषता यह है कि उसमें युग धर्म, समाज धर्म, राष्ट्रधर्म और व्यक्ति धर्म का रूपांकन है। समन्वय उनका प्राण तत्व है। कल्पना और यर्थार्थ व्यक्ति और समाज तथा प्रियतम और प्रियतम कवि और कविता शब्द और शैली संवेदना और शिल्प आदि सभी क्षेत्रों में समन्वय शीलता का दर्शन किया जा सकता है। हिन्दी के आलोचकों ने कविवर वर्मा जी को राष्ट्रीय स्तर का गम्भीर और जागरूक कवि माना है। राष्ट्रकवि वही स्वीकार किया जा सकता है जिसके काव्य में प्रीति और नीति (आदर्श) को प्रमुख तत्व माना है। अतः डा0 वर्मा जी ने रहस्यवादी कवि होने के नाते अध्यात्मिक संदेश जो मानव कल्याण हेतु आवश्यक है, अपनी रचनाओं के माध्यम से दिया है। दूसरे अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होनें मानवतावाद को प्रचुर मात्रा में प्रयोग कर एक सवर्थ महत्वूपर्ण युगीन दायित्व का पालन भी किया है।

वर्मा जी की काव्य यात्रा में जो पड़ाव हैं वे दरअसल उनके व्यक्तित्व विकास का परिचायक है और उसमें जो विविध आयाम हैं वे उनकी चिन्तनशीलता और संवेदनशीलता के परिचायक हैं। इस प्रकार कवि का काव्य भी व्यक्ति रूपाभिव्यक्ति का ही द्योतक है। डा0 वर्मा का चिन्तन व्यापक एवं विस्तृत है। स्वाध्या ने जहॉ उन्हें साधक बनाया वहीं जीवनानुभवों ने उन्हें व्यावहारिक भी बनाया। उनके चिन्तन और व्यवहार की कसौटी पर ही उनकी काव्य दृष्टि भी निश्छल और समन्वयवादी बनी है। गीतों में जहॉ वे सांस्कृतिक आधार की बात करते हैं वही काव्य में राष्ट्र एवं समाज की पृष्ठभूमि पर भी विशेष बल देते हैं। अपनी युगीन परिस्थितियों से कवि भली–भॉति परिचित है। वह युगदृष्टा एवं सृष्टा है। इसलिये वर्मा जी अपनी कविताओं में राष्ट्रीय भावनाओं पर बल देते दिखाई देते हैं। कवि वर्मा जी की काव्य यात्रा में जो रचनात्मक उपलब्धियॉ प्रकट हुई हैं उनमें मानव जीवन की समग्र अभिव्यक्ति हुई है। वर्मा जी की प्रारम्भिक रचनाओं में देशप्रेम, देशभक्ति, देशसेवा की भावना परिलक्षित हुई है। उनके गीतों में प्रकृति प्रेम और सौन्दर्य का सजीवन मूल्यांकन हुआ है। काव्य साहित्य में

छायावादी और रहस्यवादी भावना परिलक्षित है तो उनके प्रबन्ध काव्यों में आधुनिक युगबोध और भावबोध दिखलायी पड़ता है। मानवता का राग तो उनकी समस्त काव्य कृतियों में गाया गया है। इसके अतिरिक्त उनके सम्पूर्ण काव्य सहित्य का यह वैशिष्टय भी विशेष रूप से ध्यातव्य है कि उसमें मानवीय मूल्यों की स्थापना हुई है। वर्मा जी का काव्य सृजन में मानवीय मूल्यों का समावेश उनको श्रेष्ठ और स्तरीय कवि की कोटि में पहुॅचा देता है। उन्होनें जीवन के साध्यकाल तक साहित्य की साधना की और विविध भावाभिव्यक्ति हेतु नित्य नूतन शिल्पगत प्रयोग करते रहे। यही कारण है कि उनका काव्य विविध रूपों को धारण करता हुआ अपने क्रमिक विकास की गाथा स्वयं प्रकट करता है।हिन्दी साहित्य में वर्मा जी विले ही कवि हैं जिन्होनें कई दशकों और काव्य युगों में काव्य सर्जन कर अपनी काव्य यात्रा को जारी रखा है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. रामकुमार वर्मा साहित्य चिन्तन
2. आधुनिक कविता में नवीन जीवन मूल्य–डा0 हुकुमचन्द्र
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य– डा0 रामगोपाल सिंह चौहान
4. दीपदान–भूमिका – डा0 रामकुमार वर्मा

Declaration by Author (s): *"I/We hereby declare that this manuscript is my/our original work, free from plagiarism, and that all sources and any use of Artificial Intelligence tools for content generation or editing have been fully disclosed and verified for accuracy."* **डा0 कर्मेन्द्र सिंह सेंगर**